कंप्यूटर जनित कागजी कूड़ा

शशिरंजन कुमार
बाढ़ प्रबंधन अध्ययन केंद्र, राजसं., गुवाहाटी

आज के वर्तमान निरंतर प्रगतिशील औद्योगिक और वैज्ञानिक युग में कंप्यूटर की महत्ता को कोई भी नहीं नकार सकता। हालांकि तीसरी दुनिया के देशों में अभी भी मानव मस्तिष्क रूपी कंप्यूटर से ही काम होता है परंतु जापान, अमेरिका, जर्मनी, ब्रिटेन, फ्रांस आदि विकसित देशों में मानव जन्म से ही मशीनी कंप्यूटर पर आश्रित होकर रह गया है। विकसित देशों में जहाँ कंप्यूटर एक आवश्यकता बन गई है वहीं तीसरी दुनिया के देशों में इसे अभी भी विलासिता की वस्तु ही समझा जाता है। तो भी आज वर्तमान युग में खासकर भारत में आम लोगों का आकर्षण कंप्यूटर के प्रति बढ़ता ही जा रहा है। वर्तमान में भारतीय शहरों में लोग कंप्यूटर की जानकारी रखना गौरव का अनुभव करने लगे हैं ।

वर्तमान वैज्ञानिक युग में एक क्षण भी कंप्यूटर के बिना काम नहीं हो सकता। कंप्यूटर के बिना हम अंतरिक्ष यानों को प्रक्षेपित नहीं कर सकते। इसके उपयोग से आज रेलवे आरक्षण में लोगों को बहुत ही सहूलियतें हो गई हैं। दूरभाष केंद्रों के कंप्यूटरीकृत हो जाने पर आम लोगों को अब एक मिनट की बात के लिये घंटों इंतजार नहीं करना पड़ता है। चिकित्सा के क्षेत्र में कंप्यूटर के बिना चिकित्सक अपने हाथ पैर भी नहीं हिला सकता। इसके उपयोग से हमें मानव शरीर की कई नई चकित करने वाली जानकारियां हासिल हुई हैं। दूरदर्शन के क्षेत्र में अंतरिक्ष यानों के संयोग से इसने नई क्रांति ही ला दी है। सैनिक क्षेत्रों में कंप्यूटर के उपयोग के बिना कोई भी सेना विजय की सोच ही नहीं सकती।

इन सारे महत्वों के बावजूद कंप्यूटर ने मानव को एक और चकित करने वाली नई चीज दी है,वह है कंप्यूटर कागज रूपी कूड़ों का ढेर। ईश्वर ने मानव को इस सृष्टि में सबसे अंत में बनाया और मानव की जरूरत की हर चीजों को पहले से ही बनाकर रखा ताकि मानव उनका उपयोग कर सुखपूर्वक रह सके। परंतु आज मानव ने इस पृथ्वी को एक कूड़े का ढेर बनाकर रख दिया है और दिन-प्रतिदिन इस ढेर की ऊँचाई और विभिन्नता बढ़ती ही चली जा रही है। इसी ढेर में एक नया ढेर इस कंप्यूटरी कागज रूपी कूड़े का भी लग गया है। आज के प्रगतिशील युग में मानव ने जहाँ बेतहासा जनसंख्या बढ़ाकर खुद को इस पृथ्वी पर कूड़े के रूप में विकसित कर लिया हैं वहीं दूसरी ओर वह इस कूड़े को कम करने के बजाय नित्य नये-नये साधन विकसित कर दूसरे नये कूड़ों का निर्माण कर रहा है । मानव के कदम जहाँ भी पड़े हैं वहीं उसने कूड़ों का ढेर लगाना शुरू कर दिया है। हिमालय, उत्तर से लेकर दक्षिण ध्रुव तक और यहाँ तक कि अंतरिक्ष में भी उसने कूड़ा फैलाना शुरु कर दिया है। पर्यावरण विशेषज्ञों ने इसे बहुत ही गंभीरता से लेना शुरू कर दिया है और चेतावनी दी है कि अगर इसी रफ्तार से कूड़ों का ढेर बढ़ता गया तो एक समय जल्द ही ऐसा आयेगा जब मानव को इन कूड़ों के ढेर के नीचे सुरंगों में रहना पड़ जायेगा। आज जहाँ हमने अपने विकसित ज्ञान की बदौलत प्लास्टिक, यूरेनियम अवशिष्ट, कोयले की राख इत्यादि के कूड़े की कई ढेर लगा रखीं हैं वहीं अब इसे ठिकाने लगाना एक समस्या बन गई है और इसका निदान अभी तक पूर्णरूपेण नहीं हो पाया है। इसी श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए आज मानव ने सदियों से विद्यादेवी सरस्वती के वरदान रूपी कागजों को एक कूड़े के ढेर में विकसित कर लिया है। इस कार्य की सहूलियत के लिये मानव ने कंप्यूटर का आविष्कार कर लिया है। एक ओर कंप्यूटर ने मानव को

जहाँ कई क्षेत्रों में नई-नई उपलब्धियां प्रदान की हैं वहीं इसने नित्य कागजों का कूड़ा प्रदान कर एक नई समस्या से जूझने के लिये मानव के लिये एक नई सरदर्दी पैदा कर दी हैं।

आज जहाँ कहीं भी किसी कार्यालय में कंप्यूटर लगा है वहाँ हालांकि ये कमरे के क्षेत्रफल के हिसाब से 10% भाग ही घेरता है परंतु दूसरे दिन प्रातः जब कमरों की सफाई होती है तो अन्य कमरों से निकले दैनिक कूड़े का योगदान जहाँ 10% होता है वहीं कंप्यूटर के कमरे से निकलने वाले कागजी कूड़े का योगदान 90% होता है। पहले जहाँ मेज के निकट प्लास्टिक की एक बाल्टी ही रद्दी और अन्य कूड़ों को समेटने के लिये काफी हुआ करती थी वहीं आज कंप्यूटर के लगने से पूरा कमरा ही इन कागजी रद्दियों को समेटने में कम पड़ने लग जाता है। इस भयावह समस्या से आज हर आधुनिक कार्यालय को जुझना पड़ रहा है। भारतीय महानगरों में तो ये समस्या और भी विकराल होती जा रही है क्योंकि वर्तमान में महानगरों के प्रायः हर सरकारी, अर्ध-सरकारी और निजी कार्योलयों और उपक्रमों में परंपरागत टाइप मशीनों का प्रयोग वर्जित कर दिया गया है और इसका स्थान आधुनिक कंप्यूटरों ने ले लिया है। और आगे उम्मीद है कि इसी रफ्तार से भारत के हर जिला तथा ब्लाक स्तर के कार्यालयों में इस सदी के अंत तक कंप्यूटर लग जायेंगे। हालांकि कंप्यूटर हमारी प्रगतिशीलता का द्योतक है परंतु इसके द्वारा फैलाये जा रहे कागजी कूड़े की ओर अभी भी किसी का ध्यान नहीं गया है।

प्राचीन युग में हमारे ऋषि मुनियों ने भी बहुलता से उपलब्ध ताड़पत्रों और भोजपत्रों का इतना दुरूपयोग नहीं किया था जितना हम आज इस प्रगतिशील युग में इन कागजों का कर रहें हैं । एक ओर तो जहाँ हम इन कागजों के निर्माण में हरे भरे बांस के जंगलों को काटकर प्रकृति की निधि को समाप्त करते हैं वहीं दूसरी ओर बड़ी मेहनत से प्राप्त इन कागजों का इस प्रकार दुरूपयोग करते हैं। ये अत्यंत ही दुःख की बात है। आज कंप्यूटर कागजों की मांग अत्यधिक बढ़ती ही चली जा रही है परंतु इन मांगों का 75% रद्दी के रूप में हम बरबाद कर देते हैं और बाकी 25% ही हम मूल कृति के रूप में किसी जानकारी को संभाल कर रखते हैं । एक मूल कृति के लिये हमें कम से कम तीन प्रिंट लेने होते हैं जिनमें से दो प्रिंट रद्दियों के रूप में बरबाद कर देते हैं। इन सबके लिये मानव की मानसिकता भी बहुत हद तक जिम्मेदार है क्योंकि यह पाया गया है कि एक बार जहाँ कहीं भी कंप्यूटर लग जाता है वहाँ सभी कर्मचारी सारा लेखन कार्य कंप्यूटर के द्वारा ही चाहने लग जाते हैं और हस्तलिखित कार्य लगभग शून्य हो जाता है। इसका कारण भी है क्योंकि कंप्यूटर के द्वारा हम बहुत ही मनभावक नये-नये छपाई के अक्षरों में प्रिन्ट ले सकते हैं और एक बार जहाँ हमें इनकी जानकारी हो जाती है वहीं हम चाहने लग जाते हैं कि हमारा हर पत्रलेखन नित्य नये-नये छपाई के अक्षरों में निकले।

एक कंप्यूटर को स्थापित करने के लिये जहाँ हमें एक ओर तो हजारों रूपये खर्च करने पड़ जाते हैं वहीं हम इसी कंप्यूटर से एक साल के अंदर ही कंप्यूटर के आधे खर्च के बराबर कागजी रद्दियों का निर्माण कर बैठते हैं। जबकि होना तो ये चाहिए कि हम इस खर्च को बचा कर दूसरी नई उपयोगी चीजों को खरीदते। आज के जमाने में एक अच्छा कंप्यूटर कम से कम पचास हजार का आता है और इसे एक विशेष बंद कमरे में रखाना पड़ता है जहाँ कंप्यूटर और कमरे को वातानुकूलित करने के लिये एयर कंडीशनर लगाना जरूरी पड़ जाता है। इसके अलावा कंप्यूटर को चलाने के लिए एक प्रशिक्षित आदमी की भी जरूरत होती है और इन सबके साज संभाल के लिये सालाना कम से कम पच्चीस हजार का खर्च तो बैठ ही जाता है अर्थात् एक कंप्यूटर में करीब लाख रूपये का खर्च आ ही जाता है। इतना खर्च करने के बावजूद हमारा मन नहीं भरता और हम सालाना बीस-पच्चीस हजार तो इन रद्दियों के निर्माण में फिजूल खर्च कर ही बैठते हैं।

इन रद्दियों को ठिकाने लगाना भी अब एक गंभीर समस्या बन गई है, क्योंकि इनको सड़ाकर हम खाद भी नहीं बना सकते और अगर इनको जलाते हैं तो कार्बन डाई आक्साइड बनाकर पृथ्वी के वातावरण को गर्म करने में हम ऐसे ही अलग से सहायता करते हैं । वैसे भी वैज्ञानिक पृथ्वी के निरंतर गर्म होते जाने से चिंतित हैं। अब तक तो इन रद्दी कागजों का उपयोग ठोंगे बनाने के रूप में हो जाता था परंतु जबसे पोलिथिन का आविष्कार हुआ है तब से रद्दी कागजों का पुनःउपयोग ठोंगे के रूप में बहुत ही सीमित होकर रह गया है। एक ओर तो जनसामान्य को कागजों के मूल्यों में निरंतर बढ़ोत्तरी का सामना करना पड़ रहा है और पठन-पाठन की सामग्री और अखबार आम पाठकों की पहुँच से दूर होते चले जा रहे हैं वहीं दूसरी ओर कंप्यूटरी कागजों का इस प्रकार का दुरूपयोग हमें सोचने पर विवश कर देता है कि हम अपने ज्ञान का इस प्रकार दुरूपयोग अखिरकार क्यों कर रहे हैं ?

चित्रः कम्प्यूटर कागजी कूड़ा का ढ़ेर, एक आम नजारा

आज कार्यालयों में सफाई कर्मचारी भी ये मानने लग गये हैं कि पहले जब कंप्यूटर नहीं था तो उनका काम बड़ा ही आसान था और प्रातःकाल सारे कमरों की सफाई करने के बाद मात्र एक बोरे में ही वे सारे कचरे को समेट लेते थे परंतु उसी कार्यालय में कंप्यूटर लगने के बाद उन्हें सिर्फ कागजी रद्दियों को ही संभालने के लिये कम से कम चार-पांच अतिरिक्त बोरों की जरूरत पड़ जाती है। आज जहाँ कंप्यूटर कागजों के निर्माता इस व्यवसाय के दिन-दूनी रात-चौगुनी प्रगति से खुश हैं वहीं हमें यह भी सोचना चाहिए कि इस मांग को पूरा करने के लिये अंततः हमें हरे-भरे बांसों के जंगलों को भी उसी रफ्तार से काटना पड़ता है ताकि मांग और पूर्ति में अंतर कम से कम हो। आखिरकार प्रकृति की इस वन संपदा को हम बरबाद कर भी रहे हैं तो किसके लिये? मात्र रद्दियों के कूड़े निर्माण के लिये! अगर यही हमारा परिष्कृत ज्ञान है तो इससे तो अच्छा है कि आदमी अनपढ़ ही रहे।

यह भी पाया गया है कि जहाँ आदमी शिक्षित होता है वहीं वनों पर शामत आ जाती है जबकि अनपढ़ गंवार आदिवासी उसी वन की सुरक्षा में अपनी जान लगा देते हैं। आज आवश्यकता है हमें अपने आप में नई चेतना जागृत करने की और अपने आप में संयम रखने की। इन रद्दी कागजों के कूड़े का ढेर तो पढ़ा-लिखा आदमी ही लगा रहा है अनपढ़ नहीं, इसलिये हमें यह सोचना होगा कि शिक्षित आदमी को ही किस प्रकार प्रशिक्षित किया जाए कि इस नई समस्या का समाधान हो। पश्चिमी देशों में जहाँ इन रद्दी कागजों को जलाकर ऊर्जा और विद्युत का उत्पादन दैनिक उपयोग के लिए छोटी-मोटी संख्या में कर लिया जाता है वहीं हमारे देश में ये तकनीक अभी आम लोगों की पहुँच से काफी दूर है। इस कागजी बरबादी को रोकने का एकमात्र उपाय तो फिलहाल केवल राशनिंग करने का ही दिखता है परंतु लगता नहीं कि यह भी सफल हो पायेगी क्योंकि अनाजों की राशनिंग का नतीजा हमारे सामने है। अतः अंत में केवल अपने ऊपर संयम रखने का ही हो सकता है कुछ नतीजा सामने आये। उम्मीद है कि आने वाले समय में हम इस नई विकराल होती जा रही समस्या के प्रति जागरूक होंगे और कुछ ठोस कदम इसके लिये उठायेंगे। अगर समय रहते हम नहीं चेते तो एक समय ऐसा आयेगा कि हम अपने आप को कंप्यूटरी कागजों के कूड़ों के ढेर के बीच में पायेंगे और हमारे निकास का मार्ग भी हमें नही सुझेगा।